इकाई 13 मुहम्मद क़ासिम फ़रिश्ता*

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 1600 के आसपास भारत में इतिहास लेखन

13.3 इतिहासकार और उसका संरक्षणदाताः फ़रिश्ता और इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय

13.4 फ़रिश्ता की *तारीख़*

13.4.1 इतिहास की अवधारणा

13.4.2 समय तथा कालक्रम

13.4.3 स्रोत

13.5 फ़रिश्ता की *तारीख़* के संबंध में यूरोपीय दृष्टिकोण

13.6 सारांश

13.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.8 संदर्भ ग्रंथ

13.9 शैक्षणिक वीडियो

13.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपः

- 1600 के आसपास इतिहास लेखन की प्रवृत्तियों के विषय में जान पाएँगे,
- फ़रिश्ता की पृष्ठभूमि और जिस सांस्कृतिक विरासत का वह निर्वाह कर रहा था उसे समझ पाएँगे,
- फ़रिश्ता की सांस्कृतिक विरासत के उसके लेखन पर पड़े प्रभाव को जान पाएँगे,
- इतिहास के संबंध में फ़रिश्ता के विचार को समझ पाएँगे,
- समय के संबंध में फ़रिश्ता के विचार की व्याख्या कर पाएँगे,
- फ़रिश्ता की कृतियों की अलेक्ज़ेंडर डाउ द्वारा की गई व्याख्याओं का विश्लेषण कर पाएँगे, और
- फ़रिश्ता के लेखन के संबंध में यूरोपीय दृष्टिकोण का परीक्षण कर पाएँगे।

13.1 प्रस्तावना

फ़रिश्ता की *गुलशन-ए इब्राहिमी* या *तारीख़-ए फ़रिश्ता* 17वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में बीजापुर की दक्खन सल्तनत में भारत में मुस्लिम शासन का फ़ारसी इतिहास है। उस समय के इतिहासलेखन के स्थापित प्रतिमानों पर आधारित यह ग्रंथ 11वीं शताब्दी में महमूद ग़ज़नवी के समय से अपने संरक्षणदाता, बीजापुर के सुल्तान इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय, के समय तक की घटनाओं और राजवंशों की परंपरागत *तारीख़* है। चूँकि इसे उस समय के सर्वाधिक प्रभावशाली उत्तर भारत के मुग़ल राजवंश के संरक्षण में नहीं लिखा गया था, इसने वह प्रसिद्धि कभी नहीं पाई जो, उदाहरण के लिए अबुल फ़ज़ल अल्लामी (मृ. 1602) के ऐतिहासिक लेखन *अकबरनामा* तथा *आईन-ए अकबरी* को आज तक प्राप्त है। यह थोड़ा आश्चर्यजनक भी है क्योंकि अपने लिखे जाने के बाद *तारीख़-ए फ़रिश्ता* भारतीय उपमहाद्वीप में फ़ारसी इतिहासलेखन के लिए एक तरह की आदर्श *तारीख़* बन गई थी, जिसकी पुष्टि भारत और यूरोप के कई संकलनों में बड़ी संख्या में इसकी उपलब्ध पांडुलिपियों से

* डॉ. फिलिप बॉकहोल्ट, लाइपज़िग यूनिवर्सिटी, लाइपज़िग, जर्मनी

होती है, और साथ ही इस कृति के विभिन्न संशोधित और लघु संस्करणों की उपलब्धता से भी, और फ़ारसी, उर्दू, हिंदी, सिंधी, बंगाली तथा मराठी तारीख़ों में इसे अपनाए जाने से भी इसकी पुष्टि होती है। *द हिस्ट्री ऑफ़ फ़रिश्ता*, अपने अंग्रेजी अनुवाद के रूप में, जैसे इसे अलेग्जेंडर डाउ ने 1768 तथा 1772 में और जॉन ब्रिग्ज़ ने 1829, में उपलब्ध कराया था, यूरोप के प्रबोधन युग के दार्शनिकों के लिए 18वीं शताब्दी के आखिर और 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में भारत के संबंध में दृष्टिकोण बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण कृति बन गई थी। और इस प्रकार इसने भारत की आरंभिक औपनिवेशिक छवियों के निर्माण को भी प्रभावित किया था।

13.2 1600 के आसपास भारत में इतिहास लेखन

फ़रिश्ता की *तारीख़*, जिसे 1600 के आसपास लिखा गया था, वैश्विक और राजवंशों के फ़ारसी में इतिहासलेखन की उस दीर्घ परम्परा का हिस्सा है जो भारतीय उपमहाद्वीप में आरंभिक विजयों के ठीक बाद मुस्लिम राजनीतिक इकाइयों में उभरने लगी थी। यह परम्परा ग़ज़नवी काल के इतिहासकारों, जैसे अबुल फज़ल बैहाक़ी (मृ. 1077), की कृतियों के साथ शुरू होती है जिसकी *तारीख़-ए बैहाक़ी* अब आंशिक रूप से ही उपलब्ध है, यह सुल्तान महमूद के शुरुआती अभियानों और विजयों को *तारीख़* में दर्ज करती है। इसके अतिरिक्त, इसमें दिल्ली सल्तनत काल में 13वीं और 14वीं शताब्दी में लिखी गई *तारीख़ें* भी शामिल हैं, जैसे मिनहाज उद्दीन जुज़्जानी (मृ. 1266 के बाद) की *तबकात-ए नासिरी* और बनकती (मृ.1330) की *तारीख़-ए बनकती* और इसके साथ ही मुग़ल बादशाहों के काल में लिखी गई प्रख्यात *तारीख़ें* जिन्हें सोलहवीं शताब्दी के अंत से लिखा जाना शुरू हुआ था, भी शामिल हैं। फ़रिश्ता के काल तक भारत में कई राजनीतिक इकाइयाँ थीं जिनके शासन के अधीन इतिहास लिखे गए। इनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण मुग़ल साम्राज्य था जिसकी राजधानियाँ भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर में आगरा, फतेहपुर सीकरी, दिल्ली तथा लाहौर में थीं, और ये हुमायूँ के पुत्र अकबर (r. 1556-1605) के अधीन शिक्षा और कला का जीवंत केंद्र बन गई थीं। गुजरात तथा बंगाल जैसी विभिन्न सल्तनतों के अतिरिक्त दक्खन के पठार, अर्थात उपमहाद्वीप के पश्चिमी छोर, पर बहुत से एक दूसरे से जुड़े और एक दूसरे के क्षेत्र में फैले हुए भारतीय-मुस्लिम संस्कृति के कई केंद्र उभर चुके थे। इनमें निज़ाम शाहियों के अहमदनगर (1496-1636), कुतुब शाहियों के गोलकुंडा तथा हैदराबाद (1496-1687), गुलबर्गा और बीदर के बरीद शाही (1487-1619), बीजापुर के आदिल शाहियों के नगर और दुर्ग शामिल थे जो पंद्रहवीं शताब्दी के आख़िर में उदित हुए और जब तक मुग़ल साम्राज्य ने उन पर अधिकार नहीं कर लिया तब तक सोलहवीं शताब्दी के अंत तक बने रहे। इनमें से बीजापुर के लिए फ़रिश्ता ने अपनी *तारीख़* की रचना की थी।

13.3 इतिहासकार और उसका संरक्षणदाताः फ़रिश्ता और इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय

फरिश्ता, जिसका वास्तविक नाम मुहम्मद क़ासिम हिंदू शाह अस्तराबादी था, मूल रूप से ईरान से आए एक मुस्लिम शिया परिवार से संबंध रखता था और उसका जन्म 1572 से कुछ समय पहले हुआ था। अपने जीवन काल में, उसने दो दक्खन सल्तनतों, अहमदनगर और बीजापुर के सुल्तानों की सेवा की थी। इसका मुख्य कारण उसके परिवार की पृष्ठभूमि थी, जिसका संबंध अहमदनगर के दरबार से घनिष्ठ रूप से जुड़ा था, जहाँ उसका पिता गुलाम अली अहमदनगर की गद्दी के उत्तराधिकारी शाहज़ादे मीरान हुसैन निज़ाम शाह का शाही शिक्षक था। इस प्रकार फ़रिश्ता ने मुर्तज़ा निज़ाम शाह (r. 1565-1588), अहमदनगर के शासक, की सेवा में छोटी उम्र में ही प्रवेश पा लिया था और वह शाही अंगरक्षकों का अधिकारी बनाया गया था। उसके संरक्षक की हत्या के बाद जो घटनाएँ घटित हुईं उनके कारण वह 1589 के अंत में अहमदनगर छोड़कर बीजापुर आ गया और अगले वर्ष ही बीजापुर के सुल्तान इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय (r. 1580-1627) की सेवा में शामिल हो गया। इसी वर्ष (1590) फ़रिश्ता एक बार फिर दोनों सल्तनतों के बीच संघर्ष में शामिल रहा और मुश्किल से अपने जीवन की रक्षा कर पाया था। इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय की सेवा में रहते हुए उसने एक राजदूत के रूप में काम किया तथा अपने स्वामी की पुत्री के होने वाले पति मुग़ल शाहज़ादे दानियाल, मुग़ल बादशाह अकबर के पुत्र, के पास जाने की यात्रा में उनके साथ रहा था। फ़रिश्ता की मृत्यु की तारीख़ अज्ञात है और सामान्यतः इसे 1623-1624 के बाद माना जाता है। उसे दो ग्रंथों के लेखक के रूप

में स्वीकार किया जाता है: इनमें से एक रचना चिकित्सा पर है जिसका शीर्षक *दस्तूर अल-अतिब्ब* (या *इख़्तियारात-ए क़ासिमी*) है और दूसरी इतिहास की पुस्तक *गुलशन-ए इब्राहिमी* (इब्राहिम का उद्यान) है जो *तारीख़-ए फ़रिश्ता* के रूप में मशहूर हुई। इनमें से दूसरे ग्रंथ के उसके द्वारा कम से कम दो संस्करण लिखे जाने का पता चलता है। इसमें से पहले की तिथि 1606-1607 है और दूसरा, जिसके लिए उसने *तारीख़-ए नौरसनामा* शीर्षक चुना था, उसकी तिथि 1609-1610 है।

आज भी फ़रिश्ता का संरक्षक इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय, जिसके आदिल शाही वंशजों ने बीजापुर में 1490-1686 तक शासन किया था, बीजापुर की दक्खनी सल्तनत में कलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए विख्यात है। वह नौ वर्ष की उम्र में गद्दी पर आसीन हुआ और लगभग आधी शताब्दी तक उसने इस सल्तनत पर शासन किया। जिस काल के दौरान उसने *किताब-ए नौरस* (दखनी भाषा में लिखी गई गीतों की पुस्तक) के लेखक के रूप में प्रसिद्धि पाई। फ़रिश्ता के अलावा इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय ने फ़ारसी कवि नुरूद्दीन मुहम्मद ज़ुहुरी तुर्शीज़ी (मृ. 1616) और उसके ससुर मलिक क़ुम्मी (आदिल शाह के दरबार का राजकवि) को भी प्रोत्साहित किया, जिन्होंने साथ में मिलकर प्रशंसात्मक संग्रह *गुलज़ार-ए इब्राहिम* तथा *ख़्वान-ए ख़लील* की रचना की थी, विशेष रुप से ज़ुहुरी की काव्यात्मक रचनाएँ *सी नस्र* तथा *मीना बाज़ार* और साथ ही मलिक क़ुम्मी की *मसनवी मनबा-अल अवहार*, फ़ारसी कवि निज़ामी की विख्यात *मख़ज़न अल-असरार* पर आधारित है। यह उस समय बीजापुर के दरबार के उच्च सांस्कृतिक परिवेश को प्रदर्शित करता है।

बोध प्रश्न-1

1) फ़रिश्ता की सांस्कृतिक विरासत क्या थी?

.....

.....

.....

2) फ़रिश्ता के आदिल शाही दरबार से क्या राजनीतिक संबंध थे?

.....

.....

.....

13.4 फ़रिश्ता की *तारीख़*

फ़रिश्ता की *तारीख़* ग्यारहवीं शताब्दी में ग़ज़नवी वंश के समय से लेकर उसके समय अर्थात् सत्रहवीं शताब्दी के शुरुआती सालों तक के मुस्लिम भारत के इतिहास का वर्णन करती है। यह कृति एक प्रस्तावना (*मुक़द्दिमा*) तथा बारह भागों (*मक़ाला*) और एक उपसंहारात्मक अध्याय (*ख़ातिमा*) में विभाजित है। केवल *मुकद्दिमा* में उसने ग़ैर-मुस्लिमों को एक विशेष समूह के रूप में अपनी कृति की संरचना में जगह दी है, वहीं अन्य बारह *मक़ाले* केवल भारत के मुस्लिम राजवंशों से संबंध रखते हैं। पहला *मक़ाला* लाहौर के ग़ज़नवियों के इतिहास से संबंध रखता है, वहीं दूसरा *मक़ाला* दिल्ली सल्तनत तथा मुग़ल बादशाह बाबर, हुमायूँ तथा अकबर का वर्णन करता है। तीसरा *मक़ाला* बहमनी, आदिल शाही, निज़ाम शाही, कुतब शाही, इमाद शाही तथा बरीद शाही वंशों द्वारा शासित दक्खनी सल्तनतों के वर्णन को जारी रखता है, इनमें से प्रत्येक पर एक उप-भाग (*रौज़ा*) में विचार किया गया है। इसके बाद आने वाले आठ *मक़ाले* उपमहाद्वीप के क्षेत्रीय राजवंशों के इतिहास का वर्णन करते हैं, जिसमें गुजरात (*मक़ाला* 4), मालवा (5), बुरहानपुर (6), बंगाल और जौनपुर (7), सिंध, थट्टा और मुल्तान (8 तथा 9), कश्मीर (10), तथा मालाबार (11) शामिल हैं। यहाँ फ़रिश्ता भारतीय इतिहास के राजवंशों के वृत्तांत को समाप्त करता है और भारत के सूफ़ियों के संबंध में एक पूरा अध्याय (12) जोड़ता है। यह पुस्तक अंतिम अध्याय (*ख़ातिमा*) स्वर्ग के माहौल का वर्णन – हिंदुस्तान का प्रतिचित्रण – के साथ पूरी होती है, जिसमें फ़रिश्ता हिंदुस्तान की विविधता और इसके विस्तार के वर्णन के साथ उपसंहार और हिंदू राजाओं की एक सूची भी प्रस्तुत करता है।

जहाँ तक फ़रिश्ता की *तारीख़* की संपूर्ण संरचना का संबंध है, यह ध्यान देना दिलचस्प है कि इस पुस्तक का दायरा समकालीन निज़ामुद्दीन अहमद (मृ. 1594) की *तबक़ात-ए अकबरी* से बहुत भिन्न

नहीं है, जिसका विभाजन एक प्रस्तावना (*मुक़दिमा*), नौ भागों (यहाँ, *तबका*) और एक उपसंहार (*ख़ातिमा*) में है। विषयवस्तु के रूप में भी, *तबकात-ए अकबरी* भारत में मुस्लिम इतिहास का समग्र विवरण प्रस्तुत करती है जो कि पहले *तबक़े* में ग़ज़नवी शासकों के साथ शुरू होकर मुल्तान सुल्तान के स्थानीय वंश पर समाप्त होती है (*तबक़ा 9*)। अपूर्ण *ख़ातिमा* फ़रिश्ता की *तारीख़* की तरह भारत के प्राकृतिक और भौगोलिक स्थिति का वर्णन है। यह ध्यान में रखते हुए कि निज़ामुद्दीन अहमद ने अपने ऐतिहासिक लेखन को मुग़ल बादशाह अकबर के लिए लिखा था जिसके नाम पर इस *तारीख़* का नाम है, स्पष्ट हो जाता है कि दोनों *तारीख़ों* ने इतिहासलेखन की ऐसी शैली का अनुसरण किया था जो भारत के इस्लामी राज्यों में 1600 तक स्थापित हो चुकी थी।

13.4.1 इतिहास की अवधारणा

फ़रिश्ता की *तारीख़* में लेखक भारत में मुस्लिम इतिहास के अपने वृत्तांत में दरबारी इतिहास पर अत्यधिक केंद्रित है। फ़रिश्ता और पूर्व-आधुनिक युग के उसके जैसे लगभग सभी इतिहासकार (यूरोपीय तथा इस्लामी दुनिया में भी) महान् शख्सियतों अर्थात राजाओं, शाहज़ादों, अमीरों के कृत्यों को इतिहास के केंद्र में रखते थे। इसे इस संदर्भ में व्याख्यायित किया जा सकता है कि ऐतिहासिक लेखनों को सामान्यतः किसी शासक या दरबार के सदस्यों, *वज़ीर* और शाहज़ादों के लिए लिखा जाता था। इन *तारीख़ों* के पाठकों के लिए ग़ैर-अभिजात्य वर्गों, जैसे विद्या-शास्त्रियों, शिल्पकारों और किसानों, का कोई महत्व नहीं था क्योंकि उनके कृत्यों को पर्याप्त रूप से महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता था। इस प्रकार वे याद किए जाने और दर्ज किए जाने योग्य नहीं थे। शाही परिवेश पर केंद्रित होने का दूसरा कारण फ़ारसी *तारीख़ों* का प्राथमिक उद्देश्य शिक्षा देना और मिसाल के रूप में कार्य करना था और इन्हें शाही दरबार के लोगों को शिक्षण देने तथा मनोरंजन के लिए लिखा गया था, ताकि वे अतीत से कुछ सीख सकें। जब फ़रिश्ता की कृति भारत के अतीत के मुस्लिम राजवंशों के समय की घटनाओं पर विचार करती है उसमें यह विशेषताएँ देखने को मिलती हैं और यह समकालीन पाठकों को संबोधित हैं जैसा कि नीचे दिया गया उद्धरण स्पष्ट करता है। यह प्रकरण बहमनी सुल्तान फ़िरोज़ शाह (r. 1397-1422) और उसकी प्रतिदिन आयोजित सभाओं (*मजलिस*) के विषय में है। फ़रिश्ता के अनुसार संवाद का यह स्थान सुल्तान और अमीरों के बीच अनौपचारिक वार्ता का एक खुला मंच बन गया थाः

> (दरबारी) अंदर और बाहर आ जा सकते थे, जब भी वे चाहते थे, और सभा में प्रत्येक व्यक्ति वह मंगा लेता था जो वह खाना या पीना चाहता था, और दरबार के सेवक उसे हाज़िर कर देते, और वे किसी भी बारे में बात कर सकते थे। केवल दो चीज़ों को छोड़कर, और उनमें से एक जिसके बारे में कुछ भी नहीं बोला जाना चाहिए वह था दुनियावी मामले जिन्हें दरबार की सभा के समय प्रस्तुत किया जाना होता था, और दूसरी चीज़ जिसके बारे में बात नहीं की जानी थी वह एक-दूसरे के विरुद्ध बुरे शब्द थे। एक दिन मुल्ला इशाक़ सरहिंदी, जो एक विद्वान और हँसमुख इंसान था, उसने सुल्तान से कहा कि 'दरबारियों को बिना तहज़ीब के अपने साथ बात करने देने की अनुमति सुल्तान के व्यक्तित्व के लिए उचित नहीं है और सुबुक्तगीन के पुत्र महमूद तथा उसके ज्योतिषी अबू रेहान अल-बिरूनी के बीच का वाक़या मेरे कथन की पुष्टि करता है' (...) सुल्तान फ़िरोज़ शाह मुस्कुराया और कहा कि 'इस तरह के कृत्य केवल वे बादशाह कर सकते हैं जो ज्ञान और बुद्धि का अभाव रखते हैंः खुदा ना करे कि ऐसे गुण मेरे स्वभाव में घर कर जाएँ।' और वे विद्वानजन, जिन्होंने शाहज़ादों की सेवाओं का स्वाद चखा है और जो राज-सभाओं का अनुभव रखते हैं, वे जानते हैं कि यद्यपि दावा किया गया कि सुल्तान फ़िरोज़ अपने इन गुणों से कमज़ोर पड़ जाएगा, वास्तव में वह अपने स्वभाव में प्रसिद्ध राजाओं से भी उत्कृष्ट था।
>
> **फ़रिश्ता, *तारीख-ए इब्राहिमी,* भाग 2, पृष्ठ 323-324; फ़्लैट द्वारा अनुवादित, *द कोर्ट्स ऑफ़ डेक्कन सल्तनेत्स,* पृ. 40-41**

फ़रिश्ता ने ग़ज़नवी सुल्तान महमूद और उसके ज्योतिषी अबु-रेहान अल-बिरूनी (मृ. *c.*1050) के इस वाक़ये का उपयोग, जिसका उल्लेख मुल्ला इशाक़ सरहिंदी ने किया था, इस बारे में नियम तय करने के लिए किया है कि एक शासक और उसके दरबारियों के बीच एक आदर्श व्यवहार सामान्यतः किस प्रकार का होना चाहिए। इस क़िस्से का लब्बोलुआब सुल्तान के प्रति अल-बिरूनी का अभद्र व्यवहार है, जिसे उसने सीधे-सीधे यह जानकारी दी थी कि उसकी खगोलीय गणनाओं के अनुसार सुल्तान जिन कार्यों की योजना बना रहा है वह अवश्य ही ग़लत दिशा में ले जाएँगे। यह सुल्तान के लिए

पूरी तरह से अस्वीकार्य था क्योंकि सुल्तान को आलोचना के बजाय चापलूसी और तारीफ़ की ही आदत थी, उसने इस खगोलविद् को बंदी बना लिया और अपने निर्णय को इस प्रकार उचित ठहरायाः 'यह व्यक्ति भले ही अनुमानात्मक विज्ञान में निपुण हो सकता है किंतु एक श्रेष्ठ ज्ञानी को स्वभाव की समझ भी रखनी चाहिए, बादशाह, उदाहरण के लिए, बच्चों की तरह होते हैं अतः उनसे उसी के अनुरूप बात करनी चाहिए।' और यहाँ पर यह स्पष्ट हो जाता है कि सुल्तान महमूद और अल-बिरूनी का यह क़िस्सा और सुल्तान फ़िरोज़ के दरबार के खुलेपन का वाक़या एक उच्चतर उद्देश्य की पूर्ति हेतु है। ग़ज़नवी दरबार के विपरीत, जहाँ एक चिड़चिड़े शासक का उदाहरण है और जो थोड़ी भी आलोचना को सह नहीं सकता है, बहमनी सुल्तान बुद्धिमान और उत्तरदायी राजा का प्रतिनिधित्व करता है जो बनावटी-मृदुल व्यवहार के बजाय सत्य में अधिक दिलचस्पी रखता है।

इस क़िस्से का उल्लेख करते हुए इतिहासकार फ़रिश्ता का अभिप्राय शासक और इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय के दरबार से जुड़े हुए दरबारियों को दरबारी व्यवहार के स्वीकृत नियमों की शिक्षा देना है। शासक को अपने अधिकारों और दरबारियों के साथ व्यवहार में स्पष्ट होना चाहिए और दरबारियों को अपनी आलोचना को अपने तक ही सीमित रखना चाहिए यदि उनका सुल्तान इस क़िस्से के शाह फ़िरोज़ की तरह निष्कपट नहीं है। इन कहानियों के नैतिक परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट करने के लिए इतिहासकार अक्सर अपने वृत्तांतों को फ़ारसी कविता, प्रत्यक्ष संवाद और समकालीन कहावतों से समृद्ध बनाते हैं जैसे कि यह प्रकरण दर्शाता है। इतिहास की किताबों में, जैसे फ़रिश्ता की *तारीख़* में, उचित व्यवहार का संदेश एक ओर सामान्यतः सदाचरण वाले शासकों (या सामान्य रूप से, इंसानों) तथा दूसरी ओर दुष्ट और नीति-विहीन राजाओं के क़िस्सों के रूप में पेश किया जाता है। अपनी *तारीख़* में फ़रिश्ता अपने स्रोतों को सरल रूप से दोहरा भर नहीं देता है बल्कि अपने विवरण के अनुसार घटनाओं और शासकों के विषय में सूचनाओं को एकत्र करता है और उन्हें ग़ैर-भारतीय महाकाव्यों, जैसे फ़िरदौसी के *शाहनामा*, जिसे 1000 सी ई के आसपास ईरान में लिखा गया था, और हिंदू महाकाव्य *महाभारत* के वर्णनों के साथ मिश्रित कर देता है।

बोध प्रश्न-2

1) किस प्रकार फ़रिश्ता की *तारीख़* निजामुद्दीन अहमद की *तबक़ात-ए अकबरी* से मिलती-जुलती है?

.....

.....

.....

2) इतिहास के संबंध में फ़रिश्ता का क्या विचार है?

.....

.....

.....

3) फ़रिश्ता के मत में दरबारी आचरण के स्वीकृत व्यवहार क्या थे?

.....

.....

.....

13.4.2 समय तथा कालक्रम

फ़रिश्ता की *तारीख़* न केवल भारत में इस्लामी राजवंशों के इतिहास को समाहित करती है बल्कि इसका एक व्यापक कालगत दायरा भी है जो पूर्व-इस्लामिक काल को भी छूता है। अपनी कृति की ठीक शुरुआत में, *मुक़द्दिमा* में, जिसका पूरा नाम *इन्ट्रोडक्शन ऑन द बिलीफ्स ऑफ द पीपुल ऑफ हिंद एंड द एकाउन्ट्स ऑफ द एपियरेंस ऑफ इस्लाम इन देअर लैंड* है, वह पूर्व-इस्लामी संस्कृत महाकाव्य *महाभारत* की ओर जाता है, जिसे संभवतः तीसरी शताब्दी बी सी ई और तीसरी शताब्दी सी ई के बीच लिखा गया था और जिसे कुछ वर्ष पहले ही, 1582 में अकबर के आदेश पर, संस्कृत से फ़ारसी में अनुवादकों के एक समूह द्वारा अनुवादित किया गया था। अनुवाद की इस परियोजना

में संस्कृत और फ़ारसी के कई विद्वान शामिल थे। *महाभारत* के इस फ़ारसी संस्करण को अकबर के द्वारा *रज़्मनामा* का नाम दिया गया था और उसके विश्वासपात्र अबुल फ़ज़ल अल्लामी ने इसकी 'प्रस्तावना' लिखी थी। मुख्यतः गद्य रूप में किए गए इस अनुवाद में आंशिक रूप से कुछ भाग का अनुवाद अबुल फ़याज़ फ़ैज़ी (मृ. 1595) द्वारा पद्य रूप में भी किया गया था। फ़ैज़ी अबुल फ़ज़ल का बड़ा भाई था जो अकबर के पुत्र सलीम, मुराद और दानियाल के शाही शिक्षक के रूप में कार्यरत था और बाद में अकबर के राज-कवि के रूप में विख्यात हुआ। यह तथा अन्य अनुवाद परियोजनाएँ इस्लाम-पूर्व भारत के इतिहास में मुग़ल दरबार की दिलचस्पी की पुष्टि करती हैं जिनके माध्यम से संस्कृत में लिखे गए ग्रंथ व्यापक मुस्लिम पाठकों को उपलब्ध हो सकें। जैसा कि फ़रिश्ता स्वयं यह पुष्टि करता है कि उसे अकबर के दरबार में किए गए *महाभारत* के फ़ारसी अनुवाद को देखने का अवसर प्राप्त हुआ था, जिसे उसने भारत के अपने विवरण की शुरुआत में रखा है और एक ऐतिहासिक स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया है। चूँकि यह समय के संबंध में फ़रिश्ता की अवधारणा और उसकी *तारीख़* के कालक्रम की संरचना की एक गहरी समझ उपलब्ध कराता है, इसमें मौजूद सूचनाएँ दिलचस्प हैं और उन्हें, इसके एक हिस्से को, यहाँ उद्धृत किया जा रहा है। अब तक इसका कोई भी अंग्रेज़ी अनुवाद सामने नहीं आया है, जैसा कि जॉन ब्रिग्ज़ द्वारा किया गया इसका सबसे व्यापक अनुवाद, 1829 में पहली बार प्रकाशित, *मुक़द्दिमा* को छोड़ देता है और पहले *मक़ाला* के साथ शुरू होता है। फ़रिश्ता इस प्रकार लिखता है:

> *महाभारत*, जिसमें 100,000 से भी अधिक श्लोक हैं, का मूल संस्कृत से फ़ारसी में अनुवाद अबुल फ़ज़ल,[1] शेख मुबारक के पुत्र, द्वारा जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह के आदेश पर किया गया था। इन पंक्तियों के लेखक ने इसे एक आदर्श के रूप में उपयोग किया है। यह अज्ञात न रहे [...] , कि भारत के ऋषि विश्व की सृष्टि के विचार के संबंध में भिन्नता रखते हैं। केवल *महाभारत* में ही इसके 13 रूपों का उल्लेख है, इसमें से कोई भी पर्याप्त रूप से संतुष्टिदायक नहीं है कि उसे दूसरों से बेहतर माना जाए। हिंदू समय को चार युगों में बाँटते हैं: सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और अंततः कलियुग। उनका कहना है कि ये युग बिना किसी रुकावट के एक के बाद एक आते हैं। वर्तमान युग कलियुग है और जब इसका अंत होता है तब फिर से सतयुग शुरू होगा। इस प्रकार वे विश्व को शाश्वत मानते हैं जिसका कोई आदि और अंत नहीं है। यद्यपि कुछ ऋषियों का यह दावा है कि एक समय इस विश्व का अंत होगा और क़यामत का दिन आएगा [...]
>
> सतयुग, जिसमें ईमानदारी और सत्य का प्रचलन था और लोग 100,000 वर्षों तक जीवित रहते थे [...] , कहते हैं वह 1,728,000 सालों तक रहा। त्रेतायुग, जिसमें तीन चौथाई ही ईश्वर की आज्ञा मानते थे और मानव का जीवन 100,000 वर्ष का था, वह 1,296,000 वर्षों तक जारी रहा। द्वापरयुग, जिसमें मानवता बुराई की ओर बढ़ चुकी थी और व्यक्ति 1000 वर्ष तक जीता था, 8,64,000 वर्षों तक रहा, और अब कलियुग 4,32,000 वर्षों तक रहेगा, इस दौरान मनुष्य ईश्वर-विमुख हो चुके हैं, केवल एक चौथाई ही ईश्वर के नियम को मानते हैं और मनुष्य का जीवन केवल 100 सालों तक सीमित हो गया है [...] , हिंदू पंचांग के अनुसार वर्तमान में कलियुग के 4684 वर्ष बीत चुके हैं, यानी 1015 हिजरी (1606-07) में।
>
> **फ़रिश्ता, *तारीख़-ए इब्राहिमी*, भाग 1, पृष्ठ. 11-13; कॉनरमन का जर्मन अनुवाद, *हिस्टोरियोग्राफ़े एस सिंस्टिफ़टुंग*, पृ. 243-244**

पूर्व-इस्लामी *महाभारत* का समावेश यह दर्शाता है कि अधिकांश फ़ारसी तारीख़ों में प्रचलित आदर्श ऐतिहासिक विचार के विपरीत, उदाहरण के लिए, अब्दुल कादिर बदायुँनी (मृ. *c.*1615) की *मुन्तखब-उत तवारीख़*, जिसे फ़रिश्ता की *तारीख* से पहले, 14वीं शताब्दी के आख़िर में लिखा गया था, तारीख़ों में अधिकतर बल दिए जाने वाले तत्वों जैसे धार्मिक युद्ध (*जिहाद*), इत्यादि को इस *तारीख़* के लेखक द्वारा ग्रहण नहीं किया गया है। जैसा कि सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग चार युगों के *महाभारत* से किए गए समावेश से पता चलता है कि भारतीय उपमहाद्वीप में मुस्लिमों और ग़ैर-मुस्लिमों के बीच संबंध वास्तव में उस दृष्टिकोण से बहुत भिन्न थे जो दोनों समूहों को बिल्कुल ही अलग-अलग रखकर देखता है। इसके बजाय, जैसा कि फ़रिश्ता की कृति में नज़र आता है, इस्लाम-पूर्व ऐतिहासिक आख्यान ने हिंद-फ़ारसी *तारीख़* में 10वीं और 11वीं शताब्दियों के ग़ज़नवी वंश के मुस्लिम शासकों से पहले के सुदूर अतीत के हिस्से के रूप में स्थान बना लिया था। वास्तव में, ऐतिहासिक आख्यानों के मुस्लिम लेखक कभी-कभी हिंदू यानी ग़ैर-इस्लामी ज्ञान, जैसा कि अमीर खुसरो (मृ. 1325) की कृति

[1] फरिश्ता गलती से *महाभारत* के फारसी अनुवाद का श्रेय अबुल फ़ज़ल को देता है। अबुल फ़ज़ल द्वारा *महाभारत* के फ़ारसी अनुवाद की 'प्रस्तावना' मात्र लिखी गई थी।

नूह सिपेहर में देखने को मिलता है, की प्रशंसा भी करते हैं। अतः यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि *मुक़द्दिमा* में फ़रिश्ता विश्व तथा इसके कालचक्रों के संबंध में स्थानीय हिंदू विचारों को चित्रित करना पसंद करता है, बजाय कि अपनी *तारीख़* को ईश्वर द्वारा दुनिया की सृष्टि करने के परंपरागत इस्लामी विचार के साथ शुरू करने के, जिसका बाद में उल्लेख किया गया है।

बहरहाल, समय को चार युगों में बाँटने के इस हिंदू विश्वास के ठीक बाद वह *बाइबल* और *कुरान* के सृष्टि के आख्यान को प्रस्तुत करता है, इसमें वह इस्लाम के मुक्ति-दायी (salvation) इतिहास और भारत के बीच एक प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करने में सफल होता है जब वह नूह के पुत्र हाम की संतानों की चर्चा करता है जिन्होंने अपने नामों पर कई शहरों की स्थापना की थी। हाम के पुत्र हिंद के चार पुत्र थे, जिन्होंने पूरब, बंग (बंगाल), दकन और नहरवाल की स्थापना की। दक्कन की औलादें थीं; मरहट, कन्हड और तिलंग; नहरवाल के पुत्र थे बहराइच, कुंबज और मलराज। हिंद के भाई सिंध के पुत्र थे थट्टा और मुल्तान, और इसी प्रकार यह क्रम चलता है। हमारी दिलचस्पी यहाँ दकन के तीन पुत्रों मरहट, नहरवाल और तिलंग में है, जिन्होंने दकन को आपस में बांट लिया था और इतिहासकार के शब्दों में, इनका तात्पर्य क्रमशः मराठी, कन्नड़ और तेलुगु भाषी क्षेत्रों से है 'आज ये तीनों क्षेत्रीय-समूह (भाषायी तथा भौगोलिक) दक्खन में विद्यमान हैं'। फ़रिश्ता के लिए यह वंशीय प्रतीकचित्र है जो हमें दक्खन को एक विभाजित क्षेत्र के रूप में समझने में सहायता करता है, न केवल भौगोलिक और राजनीतिक रूप से बल्कि भाषायी और सांस्कृतिक रूप से भी। हालांकि फ़रिश्ता न तो भाषायी क्षेत्रों के बीच ठोस संबंधों का संकेत करता है और न ही दक्खन की एक समरूप अवधारणा का। इसके बजाय वह *महाभारत*, फ़िरदौसी के फ़ारसी महाकाव्य *शाहनामा* और *कुरान* की कहानियों को आपस में गूँथकर शहरों, जैसे उसके स्वयं के गृह-नगर बीजापुर, की स्थापना का नवीन (कथात्मक) विवरण देता है। तत्पश्चात् वह पहले *मक़ाला* में आरम्भिक 11वीं शताब्दी में महमूद ग़ज़नी के शासन के साथ शुरू करते हुए मुस्लिम इतिहास लिखना जारी रखता है।

13.4.3 स्रोत

अपनी रचना के निर्माण में फ़रिश्ता द्वारा स्रोत-सामग्री का किया गया उपयोग एक ओर तो इस्लामी इतिहासलेखन के परंपरागत ढाँचे के अनुरूप है और दूसरी ओर व्यक्तिगत पसंद तथा निजी परिस्थितियों पर आधारित है। जैसा कि उसने अपनी *तारीख़* के *मुक़द्दिमा* में व्याख्या की है, अपनी युवावस्था से ही वह इतिहास में दिलचस्पी लेता था, भारत में मुस्लिम विजय और इस क्षेत्र में मौजूद रहे धर्मात्माओं पर *तारीख़* लिखने का उसका इरादा था। स्वयं उसके शब्दों में, जब वह अहमदनगर में था तब वह अपनी इस इच्छा को पूरा नहीं कर सका और वह इस तरह की किताब को लिखना शुरू नहीं कर पाया क्योंकि वहाँ उसे इस परियोजना के लिए स्रोत उपलब्ध नहीं हो सके। इस स्थिति में बदलाव आया जब 1589 में वह बीजापुर आया, जब उसके नए संरक्षक इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय, जो खुद *तारीख़* की पुस्तकों का एक अच्छा पाठक था, ने उसे इरादे को न छोड़ने के लिए कहा। बीजापुर में इस उभरते इतिहासकार को विभिन्न क्षेत्रों की पुस्तकों तक पहुँच हासिल हुई और वह प्रत्येक चीज़ को विस्तार से पढ़ने में समर्थ हुआ किंतु इसका कोई लाभ नहीं हुआः यहाँ तक कि ऊपर उल्लिखित निज़ामुद्दीन अहमद की *तबक़ात-ए अकबरी* में भी वह जानकारी उपलब्ध नहीं थी जिसकी उसे उम्मीद थी, बल्कि इनमें कई त्रुटियाँ थीं। फ़रिश्ता, अपने ग्रंथ की शुरुआत में, उल्खेख करता है कि इसी मौक़े पर उसने अपनी रचना को लिखना शुरू किया था जिसके पहले संस्करण को उसने 1606-1607 में पूरा किया था और दूसरे को 1609-10 में, अपने संरक्षणदाता सुल्तान इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय को अर्पित करते हुए। यह ऐतिहासिक प्रक्रिया फ़रिश्ता के इतिहास लेखन के दृष्टिकोण में भी नज़र आती है; प्रथम, अपने समय से पूर्व की घटनाओं तक पहुँचने के लिए वह इतिहास की पुरानी रचनाओं का संग्रह करता है। दूसरा, वह उन घटनाओं का, जिनका उसने स्वयं अनुभव किया था, सटीक क्रम प्रस्तुत करता है, और तीसरा, जिन घटनाओं को उसने प्रत्यक्ष अनुभव नहीं किया था, उनके संबंध में अन्य के कथनों को शामिल करता है।

चूँकि उसकी रचना प्रारंभिक 11वीं शताब्दी के ग़ज़नवी राजवंश से शुरू होने वाला भारत का इतिहास थी, यह स्पष्ट है कि उसकी *तारीख़* पुरानी ऐतिहासिक पुस्तकों का संकलन मात्र थी। इतिहासकार के रूप में अपनी प्रामाणिकता के समर्थन में फ़रिश्ता अपनी पुस्तक की प्रस्तावना में 35 ऐतिहासिक ग्रंथों की सूची प्रस्तुत करता है और अपनी पूरी पुस्तक में अन्य 20 को उसने उद्धृत किया है। इन इतिहास की पुस्तकों के नामों की सूची में 13वीं और 14वीं शताब्दी की, दिल्ली सल्तनत से संबंध रखने

वाली, निशाबुरी की *ताज अल-मआसिर* (1217 में लिखित), मिनहाज उद्दीन अल-जुज़्जानी की विश्व इतिहास की पुस्तक *तबक़ात-ए नासिरी* (1259-1260 के आस-पास लिखित) और बनकती की 1317-1318 के बीच लिखी गई *तारीख़-ए बनकती* शामिल हैं। अन्य ग्रंथों में भारत के बाहर सृजित सामान्य इतिहास हैं, जैसे मीर ख़्वांद की *रौज़त अल-सफ़ा*, जिसे तैमूरी हेरात में 15वीं शताब्दी के आख़िर में लिखा गया था और ख़्वांदमीर की *हबीब अल-सियार*, जिसे 1520 के दशक में लिखा गया था। फ़रिश्ता गुजरात, बंगाल, सिंध की अन्य बहुत सी स्थानीय और क्षेत्रीय गाथाओं की सूची भी देता है। उपर्युक्त रचनाओं से यह स्पष्ट है कि फ़रिश्ता भारत के राजवंशों के अपने इतिहास लेखन में विख्यात ग्रंथों के एक विशेष समूह पर निर्भर रहा था और उसने फ़ारसी के अलावा अन्य भाषाओं में लिखी गई रचनाओं पर विचार नहीं किया था। जहाँ तक ऊपर उद्धृत *महाभारत* का सवाल है वह फ़ारसी अनुवाद का, न कि महाकाव्य के संस्कृत या किसी स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा में लिखे गए संस्करण का, उपयोग करता है। अपने विवरण को अपने समय से पहले की *तारीख़ों* पर आधारित करने के उसके दृष्टिकोण का प्रभाव उसकी *तारीख़* की संरचना पर स्पष्टतः नजर आता है, जो अंततः फ़ारसी में लिखा गया, जो उस समय इतिहास लेखन की प्रधान भाषा थी, एक परंपरागत वंशानुगत इतिहास है।

बोध प्रश्न-3

1) समय के संबंध में फ़रिश्ता का विचार क्या है?

.....

.....

.....

2) इतिहास लेखन और स्रोतों के चयन को लेकर फ़रिश्ता का दृष्टिकोण क्या रहा है?

.....

.....

.....

13.5 फ़रिश्ता की *तारीख़* के संबंध में यूरोपीय दृष्टिकोण

स्वयं में *तारीख़* के विश्लेषण करने के साथ ही यह देखना भी लाभदायक होगा कि इस रचना को किस प्रकार ग्रहण किया गया, जैसा कि यूरोप में ऐतिहासिक दर्शन में रुचि लेने वाले विद्वान-जनों के बीच कई दशकों तक यह सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ बना रहा। इसका इतिहास ईस्ट इंडिया कंपनी के बंगाल इन्फ़ंट्री के अधिकारी, लेटिनेंट कर्नल अलेग्ज़ैंडर डाउ (1735-1779) द्वारा इस कृति के पहले अंग्रेज़ी अनुवाद, *द हिस्ट्री ऑफ़ हिंदोस्तान; फ्रॉम द अर्लियस्ट एकाउंट ऑफ़ टाइम, टू द डेथ ऑफ़ अकबर; ट्रांसलेटेड फ्रॉम द पर्शियन ऑफ़ मुहम्मद कासिम फेरिश्ता ऑफ़ दिल्ली: टुगेदर विथ अ डिसर्टेशन कंसर्निंग द रिलीजन एंड फिलोसॉफी ऑफ़ द ब्राह्मण्स विथ एन अपेंडिक्स कंटेनिंग द हिस्ट्री ऑफ़ द मुगल अंपायर, फ्रॉम इट्स डिक्लाइन इन द रेन ऑफ मुहम्मद शॉ, टू द प्रेजेंट टाइम्स,* तक पीछे जाता है। मुस्लिम भारत का यह प्रथम बृहद इतिहास 1768 में दो भागों में प्रकाशित हुआ और इसमें फ़रिश्ता की कृति के आंशिक अनुवाद के साथ ही हिंदू रीतियों पर डाउ का विवरण भी शामिल था। सम्राट जॉर्ज तृतीय को अर्पण पंक्तियों को आरंभिक औपनिवेशिक विश्वदृष्टि के प्रकाश में समझा जा सकता है:

> श्रीमंत, हिंदुस्तान का इतिहास, विनम्रता के साथ, राजसिंहासन के चरणों में प्रस्तुत किया जाता है। जैसा कि अब हिंदुस्तान का कोई छोटा-मोटा नगण्य हिस्सा नहीं है, जो एक तरह से ब्रिटिश साम्राज्य की परिधि में शामिल हो गया है, अतः संप्रभु सम्राट को उस देश का यह इतिहास संबोधित करना उचित ही प्रतीत होता है। हिंदुस्तान के इतिहास में, जो अब महामहिम को अर्पित है, ग्रेट ब्रिटेन के लोग अपनी परिस्थितियों से बिल्कुल विपरीत हालात देखेंगे; और, जब वे तानाशाही के अधीन मानव के उत्पीड़न का अहसास करेंगे, तब साथ ही वे आनंद से भी भर जाएँगे, अपनी प्रसन्नतापूर्ण स्वतंत्रता पर जिसका वे राजा की सरकार के अधीन उपभोग करते हैं, जो अपनी प्रजा की सुरक्षा व खुशी में वृद्धि करके स्वयं आनंद पाता है।

यह उद्धरण स्पष्ट करता है कि डाउ 1750 तथा 1760 के दशक में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी की शुरुआती विजयों की रोशनी में भारत के राजनीतिक इतिहास को जानने की आवश्यकता समझता

था। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वह अपनी किताब को नए उपनिवेश के संबंध में ज्ञान के सृजन का हिस्सा समझता था, जिसे वह मुस्लिम अर्थात् मुग़ल राजव्यवस्था का वैध उत्तराधिकारी मानता था। फ़रिश्ता के विपरीत, जो भारत में मुस्लिम शासन को स्वाभाविक तथा न्यायसंगत मानता था, डाउ ज़ोरदार ढंग से भारतीय उपमहाद्वीप में मुस्लिम शासन के विरुद्ध तर्क देता है, जिसे ग़ैर-मुस्लिम देशी जनता के लिए एक अजनबी सी चीज़ मानता है, और फ़रिश्ता पर संस्कृत के अज्ञान (और इस प्रकार गहरे ज्ञान के अभाव का) का दोष मढ़ता है। ऊपर उद्धृत किए गए *महाभारत* के उद्धरण के संदर्भ में, जो ग़ैर-मुस्लिम भारतीय परम्पराओं को समाहित करने के बौद्धिक प्रयास के रूप में समझा जाना चाहिए था, डाउ हिंदू तथा मुस्लिम दोनों की आलोचना करता है, जब वह यह कहता है:

> 'मोहम्मडनों' का ब्राह्मण धर्मों के अनुयायियों के प्रति पूर्वाग्रह शायद ही उन्हें हिंदुओं के विषय में सामान्य निष्कपटता के साथ बात करने की अनुमति देता है। वह बहुत कुछ फ़रिश्ता की भाँति ही कहता प्रतीत होता है जब वह यह तर्क रखता है कि हिंदुओं के बीच *महाबरित* [*महाभारत*] से बेहतर अधिकारिता वाला कोई इतिहास नहीं है, वह रचना एक कविता है न कि इतिहास।

भारत की यह छवि कि भारत एक ऐसा देश था जहाँ मुस्लिमों की पहली विजय से पहले कोई इतिहास अस्तित्व में नहीं था और मुस्लिम धर्मांध थे जिन्होंने मंदिरों को ध्वस्त किया और तानाशाही का प्रसार किया, डाउ के बाद भी दशकों तक कायम रही तथा इसने इंग्लैंड, फ़्रांस और जर्मनी के इतिहास की दार्शनिक चर्चाओं में भारत और उसके लोगों की छवि को आकार प्रदान किया। फ़रिश्ता की *तारीख़* का डाउ के द्वारा किया गया पाठ और भारत की उसकी समझ ने कई रचनाओं को प्रभावित किया, जैसे एडवर्ड गिब्बन (1737-1794) की *द हिस्ट्री ऑफ़ द डिक्लाइन एंड फॉल ऑफ़ द रोमन एंपायर* का छठा भाग (1776 में प्रकाशित), वॉल्टेयर (1694-1778) की महान् कृति *Essai ur les moeurs et l'espril-des nations* (*ऐन एसे ऑन यूनिवर्सल हिस्ट्री, द मैनर्स, एंड स्पिरिट्स ऑफ़ नेशंज़*) के संशोधित संस्करण (प्रथम बार 1756 में प्रकाशित और 1769, 1775, तथा 1778 में संशोधित), इमैनुअल कॉंट (1724-1804) की 1784 में प्रकाशित *Idee zu einer allgemeinen Geschichte in weltburgerlicher Absicht* (*आइडिया फ़ॉर अ यूनिवर्सल हिस्ट्री फ़ॉर अ कॉज़्मपॉलिटन पर्पज़*)। हिंदुओं तथा मुस्लिमों के प्रति डाउ के नकारात्मक दृष्टिकोण की परिणति प्रबोधन युग के जर्मन दार्शनिक योहान गॉट्रीड हर्डर (1744-1803) के शब्दों में होती है जिसने निष्कर्ष निकाला कि हिंदुस्तान के लोग '*सती*' जैसे बर्बर रिवाज़ों में ही अज्ञानता का आनंद लेते रहते, यदि 'युद्धप्रेमी मंगोल' तथा 'धनलोलुप यूरोपियों का साहसिक' हस्तक्षेप वहाँ नहीं हुआ होता। प्रबोधन युग के कुछ प्रमुख विद्वानों के वक्तव्य दर्शाते हैं कि इतिहास का नज़रिया कभी-कभी उससे बहुत अलग होता है जो ऐतिहासिक रचना के लेखक – यहाँ फ़रिश्ता और उसकी *तारीख़* – के मन में अपनी कृति को लिखते हुए होता है।

बोध प्रश्न-4

1) फ़रिश्ता की कृति के संबंध में अलेग्ज़ैंडर डाउ का नज़रिया बताइए।

.....

.....

.....

2) फ़रिश्ता के लेखन के संबंध में यूरोपीय नज़रिया क्या था?

.....

.....

.....

13.6 सारांश

पहली नज़र में फरिश्ता की *तारीख़* भारत में मुस्लिम शासन की अन्य फ़ारसी *तारीख़ों* के समान ही प्रतीत होती है, जिसे भारतीय उपमहाद्वीप में सदियों पुरानी इतिहासलेखन की परम्परा के अंतर्गत रखा जा सकता है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, इसके लेखक के बौद्धिक क्षितिज ने इसे आकार दिया था, जिसने ग़ैर-मुस्लिम अर्थात हिंदू परंपराओं के हिस्सों को अपनी कृति में एकीकृत किया, जब

वह चार विभिन्न युगों, सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग की चर्चा करता है जिनका उल्लेख संस्कृत महाकाव्य *महाभारत* में है। साथ ही, भारत को *बाइबल* और *कुरान* की दुनिया और इसके प्राणियों के सृष्टि-संबंधी आख्यान में स्थान देने के लिए फ़रिश्ता नूह और उसके वंशजों के परंपरागत इस्लामिक आख्यान का भी उपयोग करता है। इस कृति के अन्य पहलुओं के मामले में यह कहा जा सकता है कि फ़रिश्ता की *तारीख़* नीति-परायण शासक और वैध राजत्व का वर्णन करने में इस्लामी इतिहासलेखन के सामान्य प्रतिमानों का अनुसरण करती है, जिसके लिए वह बीजापुर के इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय के दरबार में अपने पाठकों के सम्मुख यह स्पष्ट करने के लिए कि किसे उचित दरबारी आचरण समझा जाएगा और किसे नहीं, अतीत के उदाहरणों का उल्लेख करता है। यह आश्चर्यजनक नहीं है कि इस रचना में बीजापुर की सल्तनत पर विचार *मक़ाला-3* में विस्तार से किया गया है क्योंकि इतिहास लेखन का संबंध हमेशा से सत्ता की वैधता से अधिक रहा है, बजाय कि मात्र तथ्यों के प्रस्तुतीकरण के। इस *तारीख़* के पूर्ण हो जाने के बाद भी दशकों और सदियों तक प्रबोधन युग तथा प्रारंभिक औपनिवेशिक काल में भी यह सत्य बना रहा है। अठारहवीं शताब्दी के आख़िर और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में, अंग्रेज़ी में अनुवादित भारत के शुरुआती इतिहासों में से एक के रूप में फ़रिश्ता की कृति ने अत्यंत महत्व पा लिया था, जिसने अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी और जर्मन विद्वानों के लेखनों में भारतीय उपमहाद्वीप पर व्यापक चिंतन का रास्ता तैयार किया तथा विश्व इतिहास में हिंदू और मुस्लिमों के संबंध में उनके दृष्टिकोणें को आकार दिया।

13.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) देखें भाग 13.3

2) देखें भाग 13.3

बोध प्रश्न-2

1) देखें भाग 13.4

2) देखें उप-भाग 13.4.1

3) देखें उप-भाग 13.4.1

बोध प्रश्न-3

1) देखें उप-भाग 13.4.2

2) देखें उप-भाग 13.4.3

बोध प्रश्न-4

1) देखें भाग 13.5

2) देखें भाग 13.5

13.8 संदर्भ ग्रंथ

अहमद आसिफ़, मन्नान, (2020) *द लॉस ऑफ़ हिंदुस्तानः द इन्वेन्शन ऑफ़ इंडिया* (कैम्ब्रिज, मेसाचुसेट्सः हॉर्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

कॉनरमन, स्टेफ़न, (2002) *हिस्टोरियोग्राफ़ी एस सिंस्टिफ़टुंग, इंडो-परज़िश गसखिस्राइबौंग वाहरेंद देर मोगुलज़ेट* (932-1118/1526-1707) (वाइज़बाडनः रिखेर्ट).

ईटन, रिचर्ड एम., (2019) *इंडिया इन द पर्सियनेट एज, 1000-1765* (नई दिल्लीः ऐलन लेन).

फिरिश्ता, (2008-2014) *तारीख-ए इब्राहिमी*, संपा. मुहम्मद रिज़ा नासिरी, 4 भाग (तेहरानः अंजुमन-ए आतहार वा मफ़ाख़ीर-ए फ़रहंगी).

फिरिश्ता (पुनःमुद्रित 1997, प्रथम प्रकाशित 1829) *हिस्ट्री ऑफ़ द राइज़ ऑफ़ द महोम्डन पावर इन इंडिया टिल द इयर ए.डी. 1612, ट्रैन्स्लेटेड फ्राम द अरिजिनल पर्सीयन ऑफ़ महोमद कासिम फ़ेरिश्ता बाय* जॉन ब्रिग्ज़, दो भाग (दिल्लीः लो प्राइस पब्लिकेशन).

फ़ीचेल, रॉय एस., (2020) *लोकल स्टेट्स इन ऐन इम्पीरीयल वर्ल्डः आयडेंटिटी, सोसायटी एंड पॉलिटिक्स इं द अर्ली मॉडर्न डेक्कन* (एडिनबर्गः एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस).

फ्लैट, एम्मा जे., (2019) द *कोर्ट्स ऑफ़ द डेक्कन सलतनेत्सः लिविंग वेल इन द पर्शियन कोसमोपोलिस* (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस).

हार्डी, पीटर एस., (1960) 'फिरिश्ता', *एन्साइक्लोपीडीआ ऑफ़ इस्लाम,* द्वितीय संस्करण, भाग II, पृ. 921-923.

शेरवानी, हारून ख़ान एवं जोशी, पुरुषोत्तम, एम., (1974) *हिस्ट्री ऑफ़ मिडिवल डेक्कन* (*1295-1724*), 2 भाग (हैदराबादः आंध्र प्रदेश सरकार. टेक्स्ट-बुक प्रेस).

13.9 शैक्षणिक वीडियो

फरिश्ताज़ तारीख़ एंड इट्स रेन्डीशन्स
https://www.youtube.com/watch?v=kbYeupPm_ao